एक चूहे तक के लिए



लेखन व चित्रः लीसल वाइल
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एक चूहे तक के लिए



एक चूहे तक के लिए

लेखन व चित्रः लीसल वाइल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



मेरी बहन ऑली

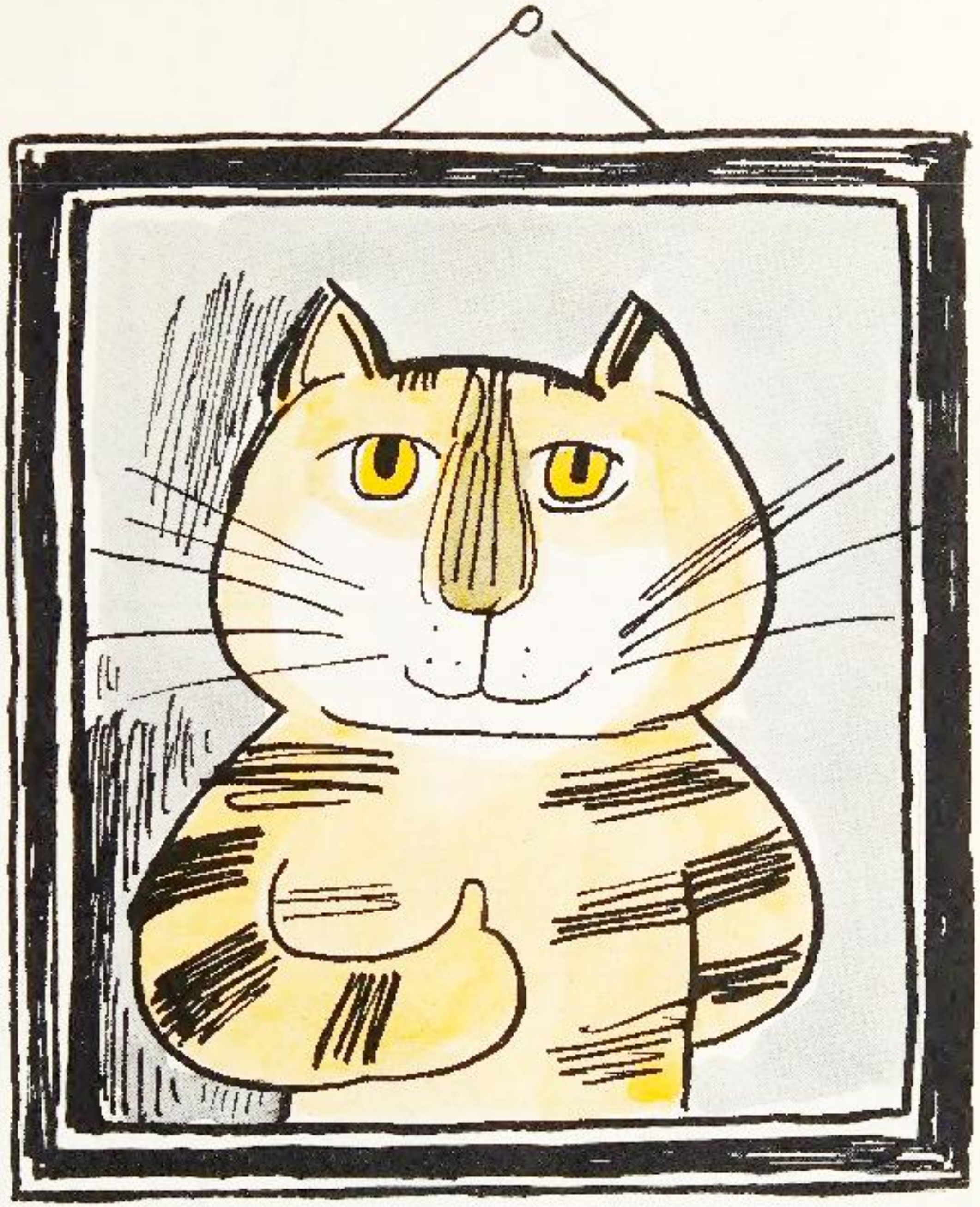
और मैक्सी, मार्सिया और

खास तौर से बोरिस के लिए



यह हैं श्रीमती ऑली, एक चुहिया, और

उनकी प्यारी-दुलारी बेटी, नन्ही ऑली।



और यह श्री ह. भू. बिल्ला हैं।

ह. भू. का मतलब है, हमेशा भूखा।



वे एक ही घर में रहते हैं।

पर साथ-साथ नहीं।

श्रीमती चुहिया नन्ही ऑली को हर दिन पाठ पढ़ाती हैं।



खाना पकाने का पाठ . . .



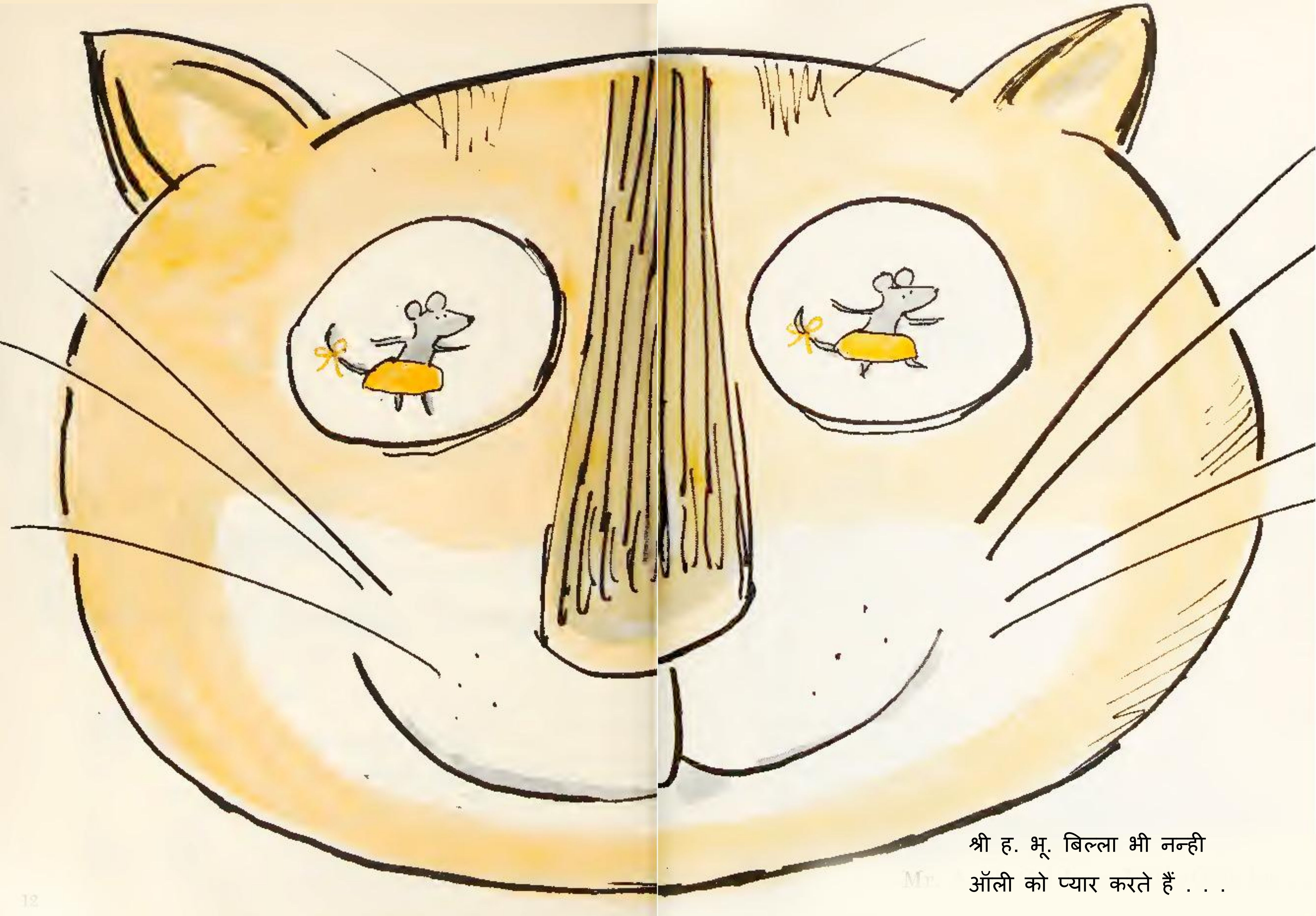
और विदेशी भाषा का पाठ . . .



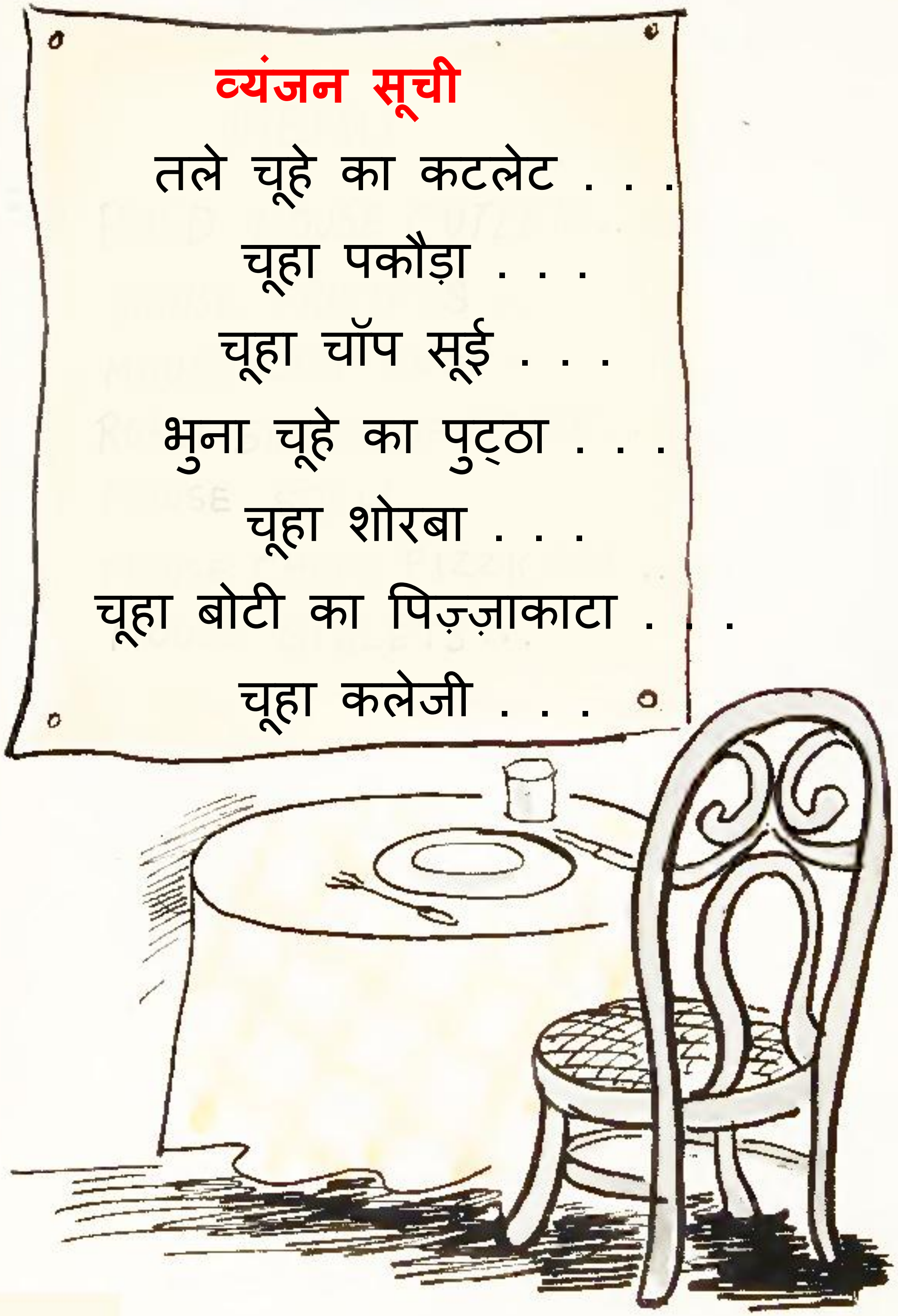
"विदेशी भाषा ज़िन्दगी में बहुत मददगार होती है,"

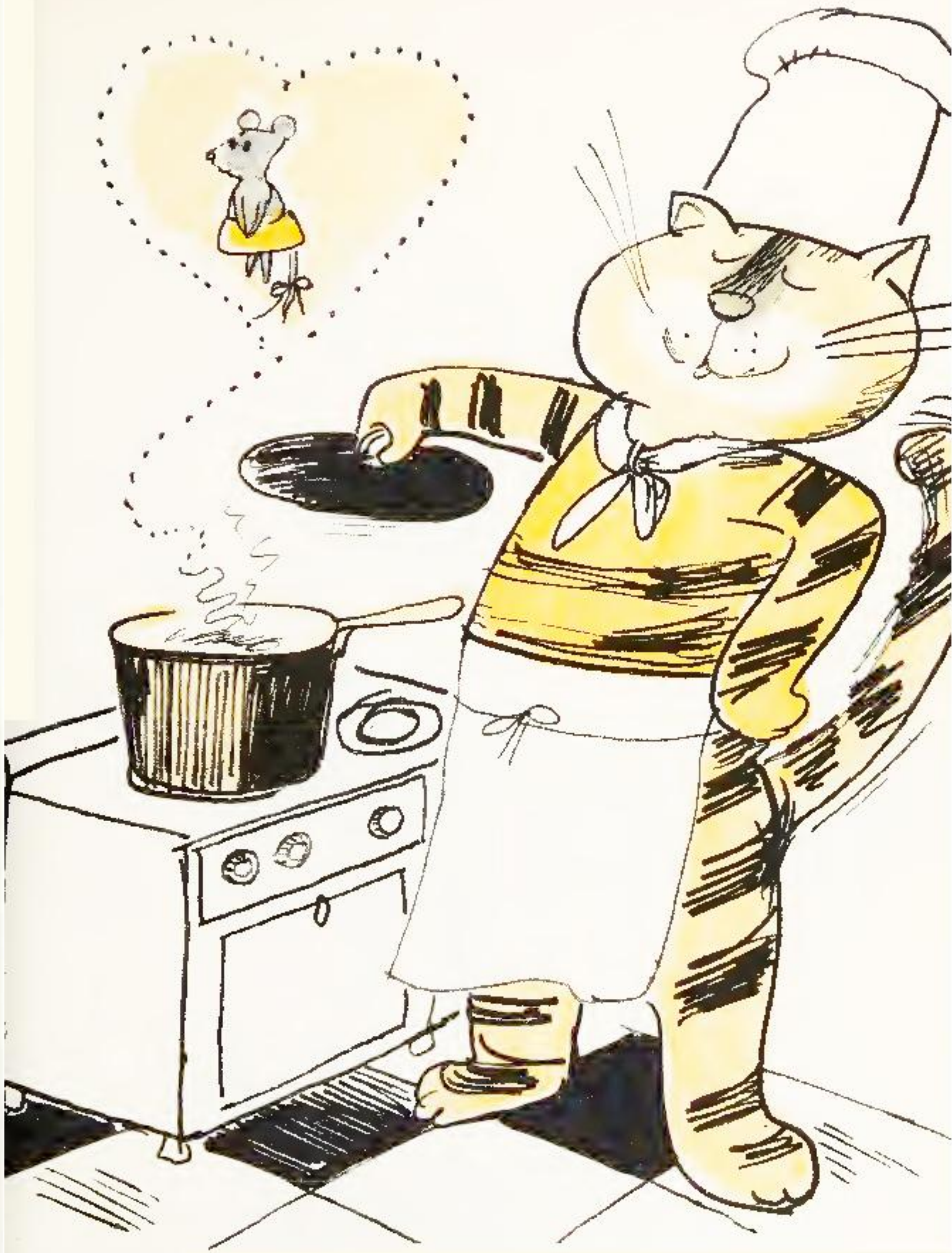
श्रीमती चुहिया कहना पसन्द करती हैं।

श्रीमती ऑली, नन्ही ऑली को बहुत प्यार करती हैं।

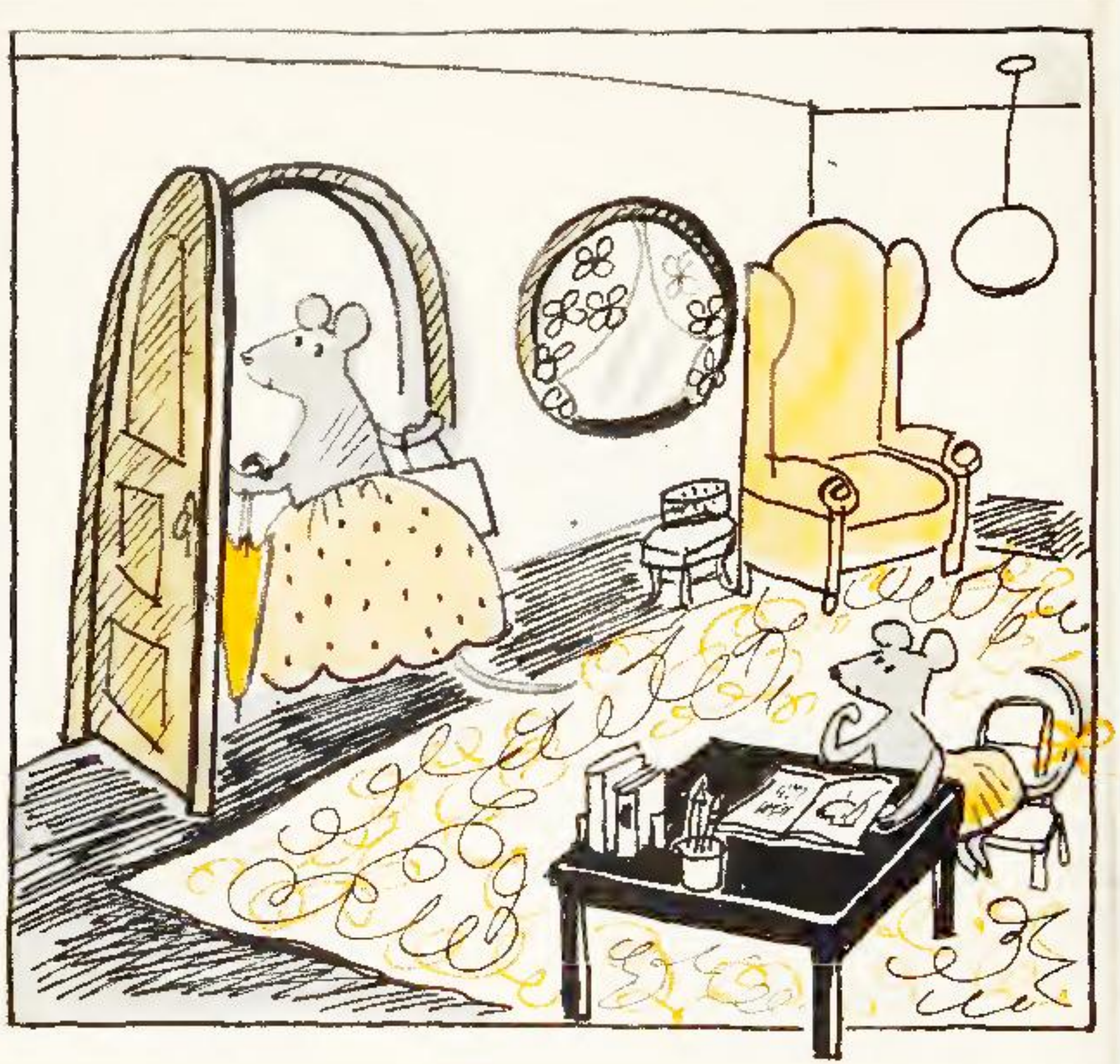


श्री ह. भू. बिल्ला भी नन्ही
ऑली को प्यार करते हैं . . .





पर उनके प्यार करने के कारण निजी हैं।



एक सुबह श्रीमती चुहिया को ख़रीददारी करने जाना था।

"देखो, तुम घर में रहना और अपने पाठों का अभ्यास करना,"

उन्होंने नन्ही ऑली को हिदायत दी।

"जब में बाहर गई हुई हूँ, किसीके लिए दरवाज़ा मत खोलना।"

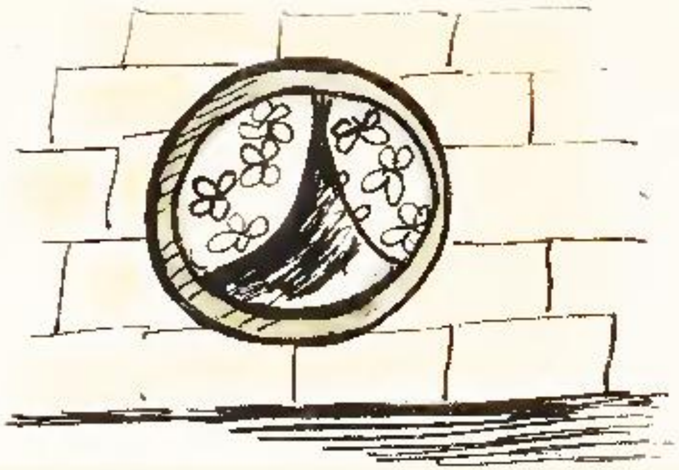
जैसे ही श्रीमती चुहिया घर से चली गईं

श्री बिल्ला उनके दरवाज़े की ओर दौड़ा।

"खट, खट, खट। मैं डाकिया हूँ," उसने कहा।

"तुम्हारे लिए एक बड़ा पैकेट है। दरवाज़ा खोलो।"





''मैं कसरत कर रही हूँ,'' नन्ही ऑली बोली।

''तब आना जब मेरी माँ यहाँ हो।''

''ठीक है,'' बिल्ले ने कहा।

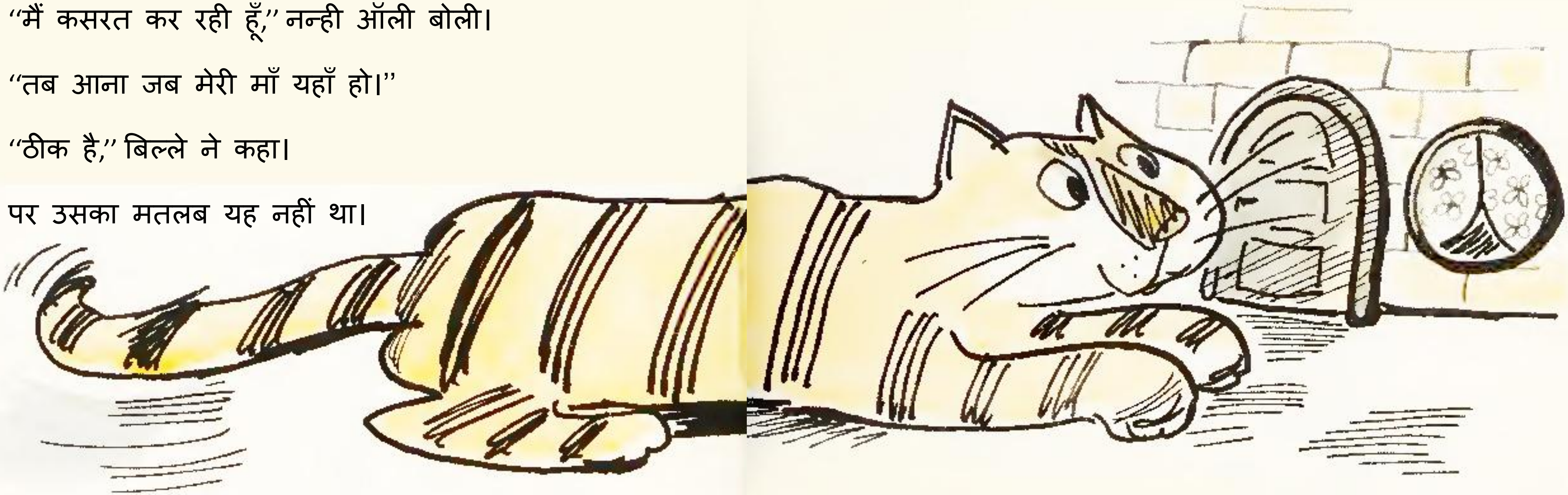
पर उसका मतलब यह नहीं था।

''खट, खट, खट,''

बिल्ला फिर से दरवाज़े पर था।

''तुमने एक टीवी कार्यक्रम में एक बड़ा इनाम जीता है।

दरवाज़ा खोलो,'' उसने कहा। ''यह रहा तुम्हारा इनाम।''



''मैं मक्के के पकौड़े तल रही हूँ,''

नन्ही ऑली ने कहा।

''तब आना जब मेरी माँ घर पर हों।''

उसने दरवाज़ा नहीं खोला।





नन्ही ऑली ने विदेशी भाषा की क़िताब खोली,

पर उसका पढ़ने का मन ही नहीं हुआ।

''वैसे भी विदेशी भाषा मेरे काम तो आएगी नहीं,''

उसने सोचा। ''तो क्यों न मैं उस पहाड़ी पर चढ़ूं

और कुछ फूल चुन लाऊँ?''



सो उसने ठीक यही किया।

So that's what she did.



पर वह दरअसल पहाड़ था ही नहीं . . .
वह तो श्री बिल्ला था।
पलक झपकते ही उसने नन्ही ऑली को पकड़ लिया।

''ला, ललाललला, वाह क्या मज़ा है,
कोमल चूहे का शोरबा!
आज रात के खाने में,'' बिल्ला गा उठा।







नन्ही ऑली डर गई थी।

पर उसने फिर भी कहा,

“तुम्हें रात का खाना तब और मज़ेदार लगेगा

अगर तुम उसके पहले कसरत कर लोगे।”

“सचमें?” बिल्ले ने पूछा।

“बेशक!” नन्ही ऑली ने जवाब दिया।



“मैं आपको कुछ कसरतें दिखाती हूँ, जो मेरी माँ ने मुझे सिखाई हैं।

पहले अपने पैर इस तरह ऊपर-नीचे करो।



तब घुटनों से नीचे झुको

और दस तक गिनो।”





एक . . . दो . . . तीन . . . चार . . .



नन्ही ऑली ने दौड़ना शुरू किया।

वह भरसक तेज़ दौड़ी।



पर पर्याप्त तेज़ नहीं।

"लो पकड़ लिया!" बिल्ला गाया।

"मैं जीता!

और अब चूहे का शोरबा हो जाए।

खाने का समय लगभग हो ही गया है।"



नन्ही ऑली अब और भी ज़्यादा डरी हुई थी।

पर उसने कहा, "मुझे एक तरीका मालूम है

जिससे तुम्हारा शोरबे का स्वाद दुगना हो जाएगा।"



"सचमें?" बिल्ले ने कहा।

"बिलकुल," नन्ही ऑली ने कहा।

"मेरी माँ ने जो तरीका मुझे सिखाया है, वही बताती हूँ।

पर पहले हमें कुछ तेज़ पत्ता

और सरसों के दाने तोड़ने होंगे।"



नन्ही ऑली ने दौड़ लगाई।

वह बहुत तेज़ी से दौड़ी।





पर पर्याप्त तेज़ी से नहीं।

“पकाने का तरीका हो न हो,

तुम अब सीधे पतीले में जाओगी,” बिल्ले ने कहा।

और वह अपने रसोई घर की ओर चल दिया।



“बचाओ! मदद करो!“ नन्ही ऑली चीखी।

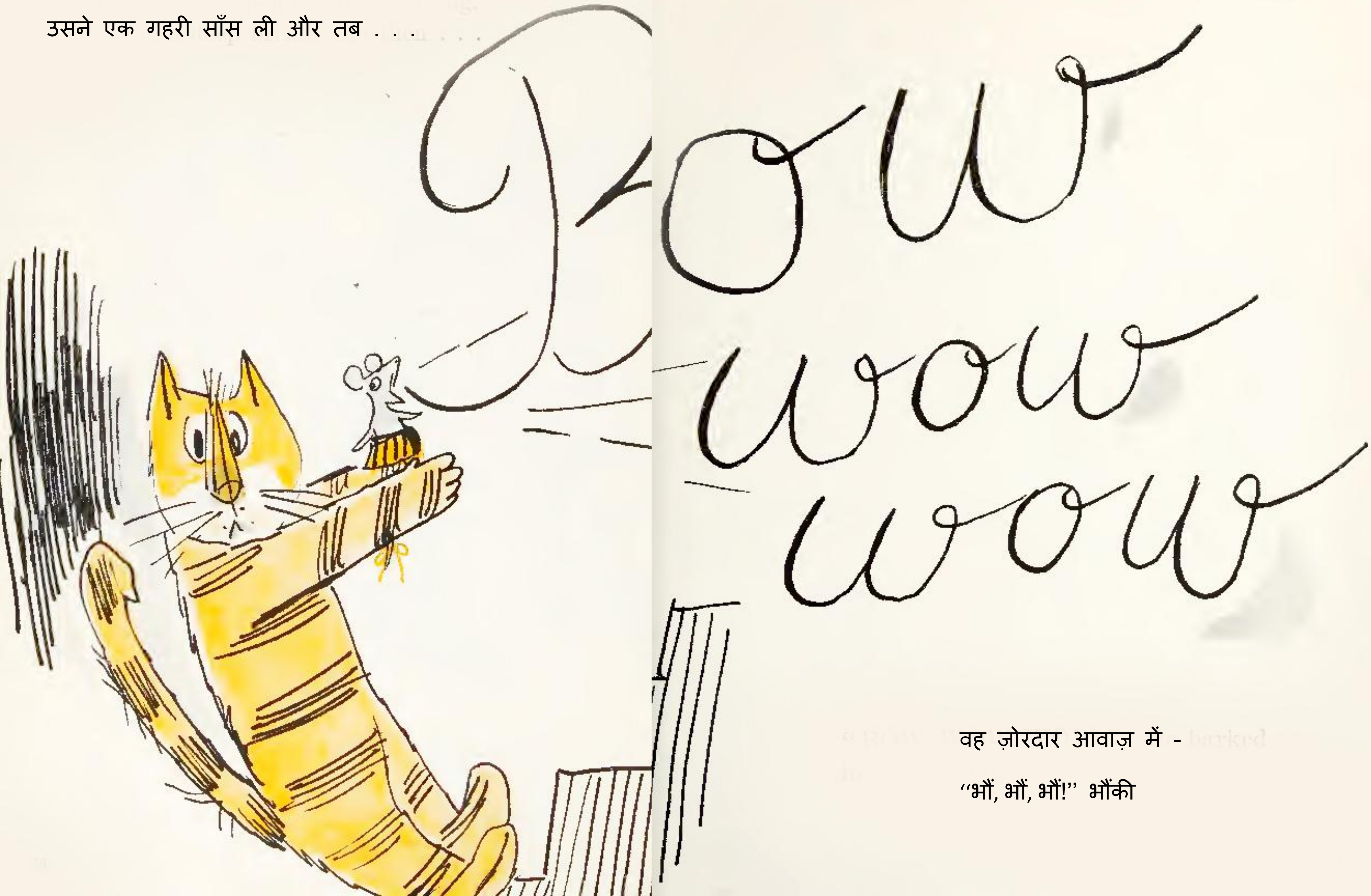
पर किसीने उसे सुना ही नहीं।

“अरे रे!” उसने सोचा।

“अब मैं क्या करूँ?”

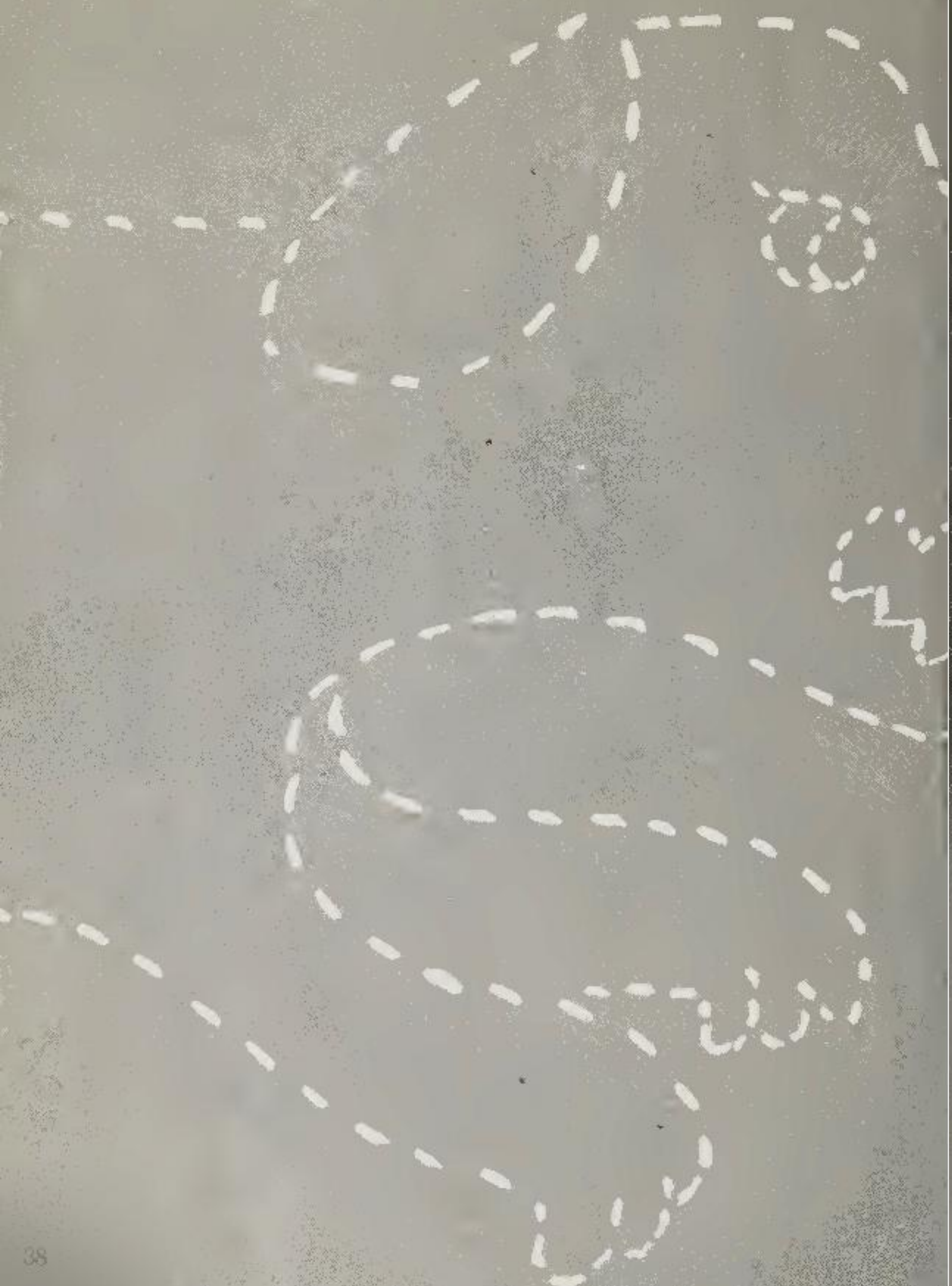
तब अचानक उसे याद आया।

उसने एक गहरी साँस ली और तब . . .



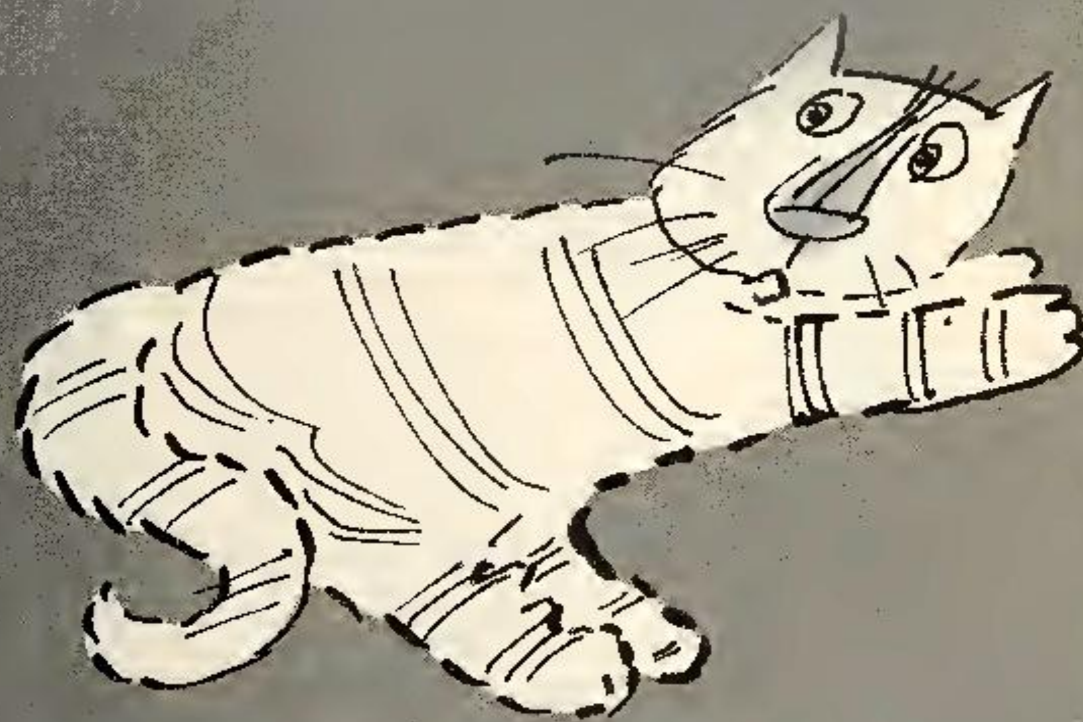
वह ज़ोरदार आवाज़ में -

“भौं, भौं, भौं!” भौंकी





''बचाओ! कुत्ता!'' श्री बिल्ला चिल्लाया।



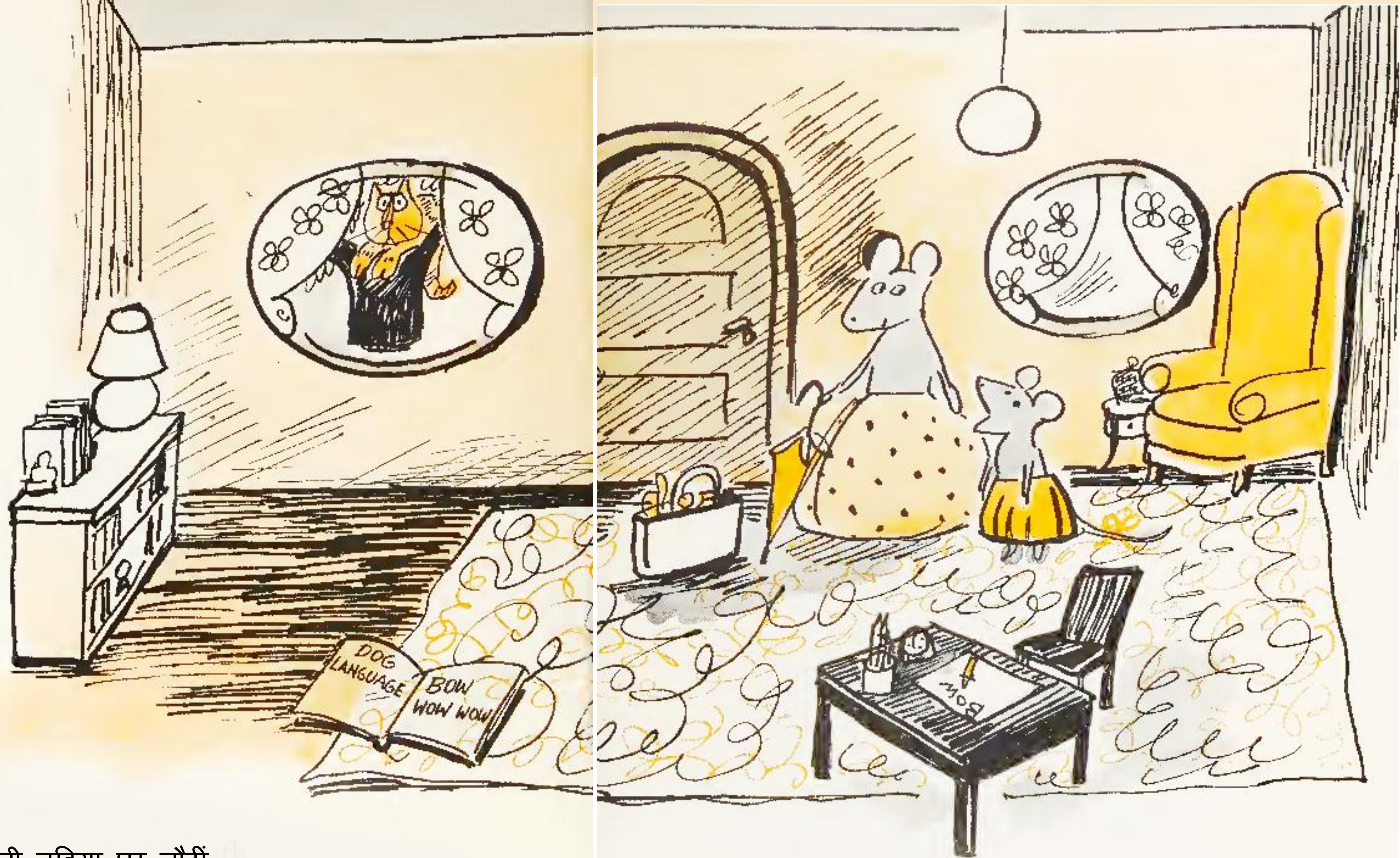


और पलक झपकते ही वह एक पेड़ पर था।



नन्ही ऑली ने पल भर भी नहीं गंवाया।

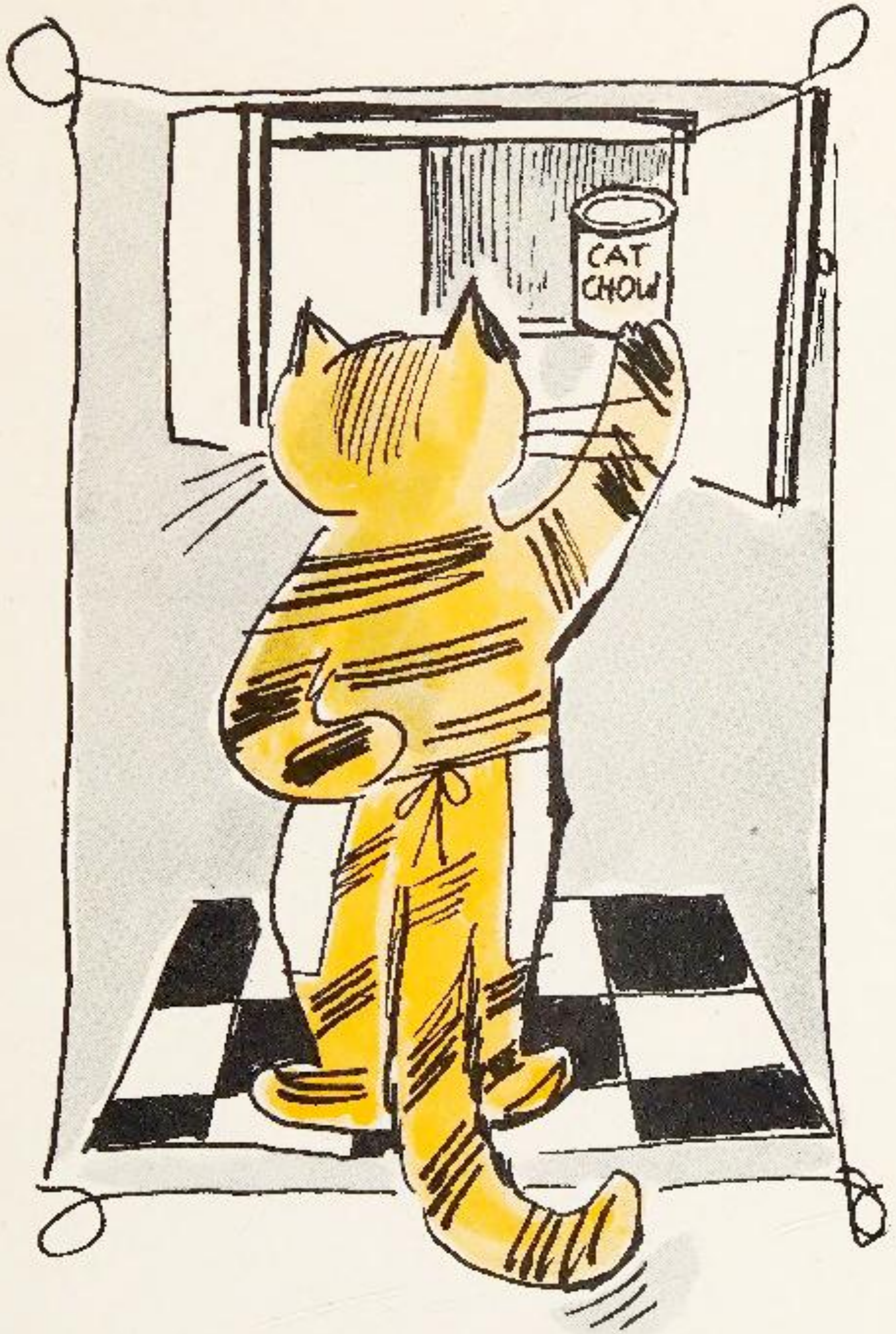
वह दौड़ी और दौड़ती गई। वह तब तक नहीं रुकी जब तक वह अपने घर में सुरक्षित न पहुँच गई।



जब श्रीमती चुहिया घर लौटीं
तब भी नन्ही ऑली की साँस फूली थी।
''देख रही हूँ तुमने कसरत की है,'' श्रीमती चुहिया ने कहा।
''क्या तुमने विदेशी भाषा का भी अभ्यास किया?''
''हाँ,'' नन्ही ऑली ने कहा।
''मैं दिखाती हूँ कैसे, भौं, भौं, भौं!''

''बहुत बढ़िया,'' उसकी माँ ने तारीफ़ की।
''विदेशी भाषा ज़िन्दगी में बहुत मददगार होती है।''
''ओह हाँ!'' नन्ही ऑली ने कहा।
''एक चूहे तक के लिए!''


सुखद अन्त


CAT
CHOW